लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - ७

मूलशङ्कर-नाट्यत्रयी

संयोगितास्वयंवरम्, छत्रपतिसाम्राज्यम्, प्रतापविजयम्

सम्पादकः
राजेन्द्रः नाणावटी

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नवदेहली

अनुक्रम

पुरोवाक्	iii
सम्पादकीय	v
अनुक्रम	vii
प्रस्तावना	ix
आ० मूलशंकर माणेकलाल याज्ञिक	xxv
पं० श्रीधर लक्ष्मण शास्त्री	xxix
from Author's Introduction	xxx
Some Opinions	xxxi

नाट्यत्रयी

संयोगितास्वयंवरम्	१-८७
छत्रपतिसाम्राज्यम्	८९-१८९
प्रतापविजयम्	१९१-२८४

आ० मूलशंकर माणेकलाल याज्ञिक

श्री याज्ञिकजी का जन्म सा.सं.१८८६ में ३१ जनवरी के दिन मध्य गुजरात के नडियाद (सं. नटपुर) नगर वास्तव्य वडनगरा नागर ब्राह्मण पिता श्री माणेकलाल उमियाशंकर याज्ञिक के घर माता अतिलक्ष्मी की कोख से हुआ। इनकी प्रारम्भिक एवं शालेय शिक्षा नडियाद में हुई। फिर एक वर्ष जूनागढ की बहाउद्दीन कोलेज में पढने के बाद इन्होंने वडोदरा की प्रसिद्ध बडौदा कोलेज में उच्च शिक्षा प्राप्त की। उस वक्त वहां श्री अरविन्द (बाद में महर्षि अरविन्द) भी अंग्रेजी के प्राध्यापक एवं प्राचार्य थे। १९०७ में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के उपरांत उन्हें कौटुम्बिक कारणवश मुंबई की स्पीसी बेंक में नौकरी प्रारम्भ करनी पड़ी, पर बड़ौदा राज्य के गुणज्ञ महाराजा सयाजिराव (तीसरे)ने उनकी विद्वत्ता से आकृष्ट हो कर उन्हें बडौदा के शिक्षा विभाग में निमन्त्रित किया तो वे १९१४ में वडोदरा आये और १९१५ में नवप्रारंभित शासकीय संस्कृत पाठशाला के प्रथम प्राचार्य के रूप में नियुक्त हो गये। इस पद पर १७ वर्ष रहकर १९३२ में वे मेहसाणा (उत्तर गुजरात) की शाला के शिक्षक बनकर गये और १९४२ में वहां से सेवानिवृत्त हुए। (उन दिनों निवृत्तिवय ५५ वर्ष की थी।) निवृत्ति के उपरान्त भी वे एस्.एन्.डी.टी. महिला कोलेज की कन्याओं को संस्कृत साहित्य पढाते रहे। शेष जीवन नडियाद में बीताते हुए उन्होंने १३ नवम्बर १९६५ को अपनी जीवनलीला समाप्त की।

मूलशंकरजी का प्रथम विवाह उनकी १३ वर्ष की आयु में श्रीमती महाविद्या के साथ हुआ। इस वैवाहिक जीवन में इनके तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ हुई, तीनों पुत्र अल्प आयु में ही चल बसे। प्रथम पत्नी के अवसानोपरान्त ३५ की आयु में इनका दूसरा विवाह श्रीमती वीरेन्द्रबाला के साथ हुआ। इस विवाह से इनके तीन पुत्रियाँ प्राप्त हुईं। वीरेन्द्रबाला का भी १९४५ में गले के कैन्सर से निधन हुआ तो वे स्वयं पांचों पुत्रियों की माता बन गये। मृत्यु के समय ये पांचों पुत्रियां (सुमति, मधु, अरविन्दा, सुवर्णा एवं मुद्रिका) जीवित थीं। इस समय अरविन्दाबहन अमरिका में और दौहित्री

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नवदेहली